International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 531-532

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 531-532
www.allresearchjournal.com
Received: 11-11-2015
Accepted: 15-12-2015

स्मिता कुमारी
शोधार्थी, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
स्मिता कुमारी
शोधार्थी, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

मैला आँचल : समग्र विश्लेषण

स्मिता कुमारी

सारांश
आंचलिक उपन्यास के सर्वश्रेष्ठ शिल्पी निस्संदेह रेणु हैं। वे व्यक्तिगत रूप से समाजवादी आन्दोलन से जुड़े थे। उनके सभी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना कमोबेश सन्निहित है। वे जन्मजात रचनाकार थे। उनके दो सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' की कथा भूमि ग्राम है तो इसका कोई राजनीतिक अथवा अन्य कारण नहीं। 'रेणु' के बाह्य व्यक्तित्व में नागर संभ्रातता थी किन्तु उनका आंतरिक व्यक्तित्व ग्रामीण था।

प्रस्तावना
आंचलिक उपन्यास को रेणु ने जिस ऊँचाई पर पहुँचाया, वह अन्यतम है। उनकी लेखनी की धार ने ग्रामीण–जीवन को तराशकर साहित्य जगत में स्थापित किया। स्थानीय रंग की अधिकता को आंचलिक उपन्यास समझनेवाले रेणु से आगे बढ़कर नागार्जुन तक जाते हैं और ग्राम्य–जीवन पर आधारित उपन्यास को आंचलिक उपन्यास मानने वाले प्रेमचंद का नाम लेने में नहीं चूकते हैं। किन्तु आंचलिक उपन्यास का स्वरूप समझने वालों के लिए रेणु के विषय में भ्रम नहीं होना चाहिए। हिंदी आलोचना को 'आंचलिक उपन्यास' शब्द एक मात्र रेणु की देन है। उपन्यास आंचलिक हो सकता है, इस बात को जान और मानकर आंचलिक उपन्यास लिखने वाले प्रथम रचनाकार रेणु ही हैं।
मैला आँचल 'रेणु' का प्रथम उपन्यास है। लेखक की प्रथम कृति होने पर भी इस उपन्यास ने रेणु को ऐसी प्रतिष्ठा, सम्मान और आदर प्रदान करा दिया कि वह साहित्य जगत में अमर हो गए। कहना न होगा कि 'मैला आँचल' ग्रामीण–जीवन और आंचलिक संस्कृति का महाकाव्य है। उपन्यासकार ने इस उपन्यास में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं को पर्यवेक्षकीय नजर से देखा। नलिन विलोचन शर्मा ने 'मैला आँचल' की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और इसे हिंदी साहित्य में स्थापित करने में खुलकर हस्तक्षेप भी किया। उन्होंने लिखा– 'मैला आँचल' गत वर्ष का ही सर्वश्रेष्ठ उपन्यास नहीं है, वह हिंदी के दस श्रेष्ठ उपन्यासों में सहज ही परिगणनीय है। स्वयं मैंने हिंदी के दस श्रेष्ठ उपन्यासों की जो तालिका प्रकाशित कराई है, उसमें उसे सम्मिलित करने में मुझे कठिनाई न होगी। मैं किसी दुविधा के बिना एक उपन्यास को हटाकर इसके लिए जगह बना सकता हूँ। .....मैंने इसे 'गोदान' के बाद हिंदी का वैसा दूसरा महान उपन्यास माना है। मुझे संतोष है कि मेरा यह मत दूर–दूर तक प्रतिध्वनित हुआ है।[1]
स्वातंत्र्योत्तर भारत में जनता की जो आशा और आकांक्षा थी वह पूरी नहीं हुई। नेताओं और सरकार से जनता का मोहभंग हुआ। अभाव और तनाव होने के कारण लेखकों ने पीड़ा अनुभव किये। इन पीड़ाओं और संवेदनाओं को व्यक्त करने की लिए कथाकार शहर छोड़ गाँवों की तरफ उन्मुख हुए। हिंदी के बहुत से साहित्यकारों ने प्रेमचन्द के बाद फिर से देहाती जीवन को लेकर उपन्यास लिखे। दरअसल शहरी जीवन की कुंठा और घुटन से उकताने पर नये साहित्यकारों का गाँवों के सहज और अकृत्रिम जीवन के प्रति लगाव और झुकाव बढ़ा। निराशा और हताशा के वातावरण में उन्होंने ग्रामीण परिवेश की ओर झुकते हुए उसमें रस और सुन्दरता की खोज की, क्योंकि चाहे जिन कारणों से हो, आज के शहरी जीवन को, विशेषकर मध्यमवर्गीय शहरी जीवन को, एकरसता और आत्माभिमुखता ने चारों ओर से घेर लिया है। रेणु ने ग्रामीण यथार्थ को व्यक्त करने के लिए आंचलिक उपन्यास को सृजित किया जो हिंदी साहित्य में मील का पत्थर साबित हुआ।
अंग्रेजों के शोषण से लड़ने के लिए गाँधी जी ने अपना जीवन खपा दिया और अंततः भारत को आजादी मिली। लेकिन स्वातंत्र्योत्तर भारत में लोगों की आकांक्षा पूरी नहीं हुई। उन्हें लगा कि यह आजादी झूठी है। बालदेव गाँधीवादी मूल्यों का प्रतीक है। वह अहिंसा में विश्वास करता है, मेरीगंज में वह कॉंग्रेस का पहला आदमी है और मूलतः चंदनपट्टी का रहनेवाला है। वह गाँधी की हत्या का समाचार सुनकर बेहोश हो गया था, किंतु उसकी समझ बहुत सीमित है। गाँधी की अहिंसा पर उसकी अंधश्रद्धा है, इसलिए वह कुश्ती का विरोधी है। आगे चलकर वह लक्ष्मी के प्रति आसक्त होता है और मठ छोड़कर लक्ष्मी के साथ रहने लगता है। लक्ष्मी को बालदेव पर अत्यधिक विश्वास है।

वह बालदेव के ऊपर सब कुछ छोड़ देती है। भंडारा में बालदेव को ही सभी अनुपम मानते हैं। रेणु ने लिखा है– ''रच्छा करो बालदेव जी! तुम कह दो एक बार–तुम्हें रामदास की दासी नहीं बनने दूँगा! तुम बोलो– चन्दनपट्टी नहीं जाऊँगा। मुझे छोड़कर मत जाओ बालदेव! दुहाई।''(2)

रेणु ने 'मैला आँचल में लक्ष्मी के माध्यम से भारत माता की वाणी को प्रकट किया है। भारत माता की स्थिति कैसा होती जा रही है। इस पंक्ति से स्पष्ट हो रही है–

''चलते–चलते पगु थका
नगर रहा नौ कोस,
बीचहिं में डेरा परॉं
कहहु कौन का दोख!''(3)

मेरीगंज की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति विषमता से ग्रस्त है। विश्वनाथ प्रसाद, रामकिरपाल सिंह और खेलावन यादव के पास गाँव की अधिकांश जमीन हैं। इन लोगों के अपने–अपने मजदूर हैं। खुदकाश्त के अतिरिक्त ये लोग अपनी कुछ जमीन आधीदारी और बँटाईदारी में छोटे किसानों को दे डालते हैं। विश्वनाथ प्रसाद बहुत चतुर–चालाक आदमी है संथालों और गाँव वालों को आपस में लड़वाकर अपना उल्लू सीधा करता है। कालीचरण समाजवादी नेता है। वह इस धूर्त के चक्कर में आ जाता है और संथालों के विरूद्ध खड़ा होता है। लेकिन डॉक्टर प्रशांत ने जब समझाया कि संथालों के बाद गाँव के किसानों की बारी आएगी, तो कालीचरण सचेत होता है, लेकिन तब तक देर हो गयी थी।

उपन्यासकार ने शोषक वर्ग के रूप में जमींदारों को चित्रित किया है। छोटे किसान की तुलना में गरीब और बे–जमीन मजदूरों की हालत खम्हार के बैलों जैसी थी, जिनके मुँह में जाली का 'जाब' लगा होता है। मजदूरी की दर इतनी कम थी कि भर पेट खाना मिलना संभव नहीं था। तंत्रिमा, गहलोत और पोलिया टोली के अधिकांश लोगों ने कभी पूड़ी और जलेबी चखी नहीं थी। इसलिए धर्मभ्रष्ट और पाखंडी महंत सेवादास के द्वारा पूड़ी–जलेबी भंडारा की घोषणा के बाद लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन होने लगा। आर्थिक विभिन्नता की चक्की में पिसते–पिसते इंसान में संवेदना और मानवीयता खत्म हो जाती है। फलस्वरूप गरीबों की लाचारी और विवशता से लाभ उठाकर उनकी बहू–बेटियों पर हाथ साफ करनेवालों की गाँवों में कमी नहीं है। फुलिया और सहदेव मिसर का एक प्रसंग उपन्यास में है। रेणु ने लिखा है–

''बोलो।
''सहदेव मिसर हमारे घर में घुसे थे।''
''तुमने हल्ला क्यों नहीं किया?''
''.....''
''बोलो डरने की कोई बात नहीं।''
'बाबा के डर से।''
''बाबा के डर से?''
''हाँ, बाबा सहदेव मिसर का करजा धारते हैं।''
''.....''
''कौन गाछ ऐसा है जिसमें हवा नहीं लगती
है और पत्ता नहीं झड़ता है!''
''दूसरों की बात मत कहो, अपनी बात बताओ!''
''अकेले हमको क्यों दोख देते हैं? गाँव–भर का यही हाल है। कौन घर ऐसा है..... ।''(4)

मेरीगंज के सभी गरीब किसी न किसी बाबू के कर्जदार हैं। गरीबों से सादे कागज पर अँगूठा लगवाकर बाबू लोग कर्ज देते हैं। कालीचरण ने जब गरीबों को इस कार्य के लिए रोका तो होली में इन लोगों को कर्ज देने से इन्कार कर दिया। इस स्थिति में गाँवों के लोगों में नई चेतना आई और लोग सजग हुए। डॉक्टर प्रशांत इंसानों को मलेरिया और कालाजार के रोगों से बचाने के लिए मेरीगंज आया था, किंतु यहाँ आने पर उसने अनुभव किया कि यहाँ तो इंसान है ही नहीं। सभी के सभी जानवरों की हालत में जिंदगी बिता रहे हैं। उसने सोचा पहले इन जानवरों को इंसानियत में ढाला जाए। उन्होंने सिर्फ रिसर्च कंप्लीट किया और पाया कि इन रोगों की असली जड़ है– ''गरीबी और जहालत–इस रोग के दो किटाणु हैं।''(5)

रेणु ने ''मैला आँचल'' में जाति प्रथा पर करारी चोट कीया है। ब्राह्मण और राजपूत अपनी अपनी जातियों को अन्य जातियों से कैसे श्रेष्ठ समझते हैं, इसका पर्दाफाश करने में लेखक ने कोई कोताही नहीं की है। मेरीगंज में ब्राह्मणों के कुल जमा दस घर ही हैं। इसके बावजूद अपनी कपट और धूर्तता से वे सम्पूर्ण गाँव में शक्ति केन्द्र बने हुए हैं। राजपूतों को अपने अनुकूल बनाए रखने के लिए वे धमकी देते हैं कि अगर राजपूतों ने ब्राह्मणों का साथ न दिया तो ब्राह्मण लोग यादव को राजपूत मान लेंगे। स्वराज प्राप्ति से पूर्व के काल में यादव, गहलोत आदि जातियों के लोग जनेऊ धारण करके अपने आप को क्षत्रिय के बराबर मानने लगे थे। ब्राह्मण की कुटिलता पर लेखक व्यंग्य करते हैं– ''जोतखी जी अपनी स्त्री से पूछे कि उनके पेट में किसका बच्चा है। चिल्लाकर कहता है। कौन नहीं जानता कि जोतखी जी का नौकर..... ।''(6)

समग्रतः आंचलिक उपन्यास होने के कारण मैला आँचल में पात्रों की संख्या लगभग दो सौ है। इन पात्रों में डॉक्टर प्रशांत सर्व प्रमुख पात्र है। शोषक वर्ग के रूप में तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद, राम किरपाल सिंह और खेलावन यादव है। उपन्यास के पुरुष पात्रों में हर गौरी, बालदेव, जोतखी, कालीचरण, बावनदास आदि हैं। इस उपन्यास में स्त्री पात्रों में लक्ष्मी प्रमुख पात्र है। फुलिया, सेमिया, रमपियरिया आदि अन्य पात्र है।

संदर्भ–सूची

1. आजकल, फरवरी : 2016, वर्ष 71, अंक–10, पूर्णांक–850, पृ–9
2. मैला आँचल : रेणु, पृ0–152
3. मैला आँचल : रेणु, पृ0–153
4. मैला आँचल : रेणु, पृ0–82
5. मैला आँचल : रेणु, पृ0– 129
6. मैला आँचल : रेणु, पृ0–82